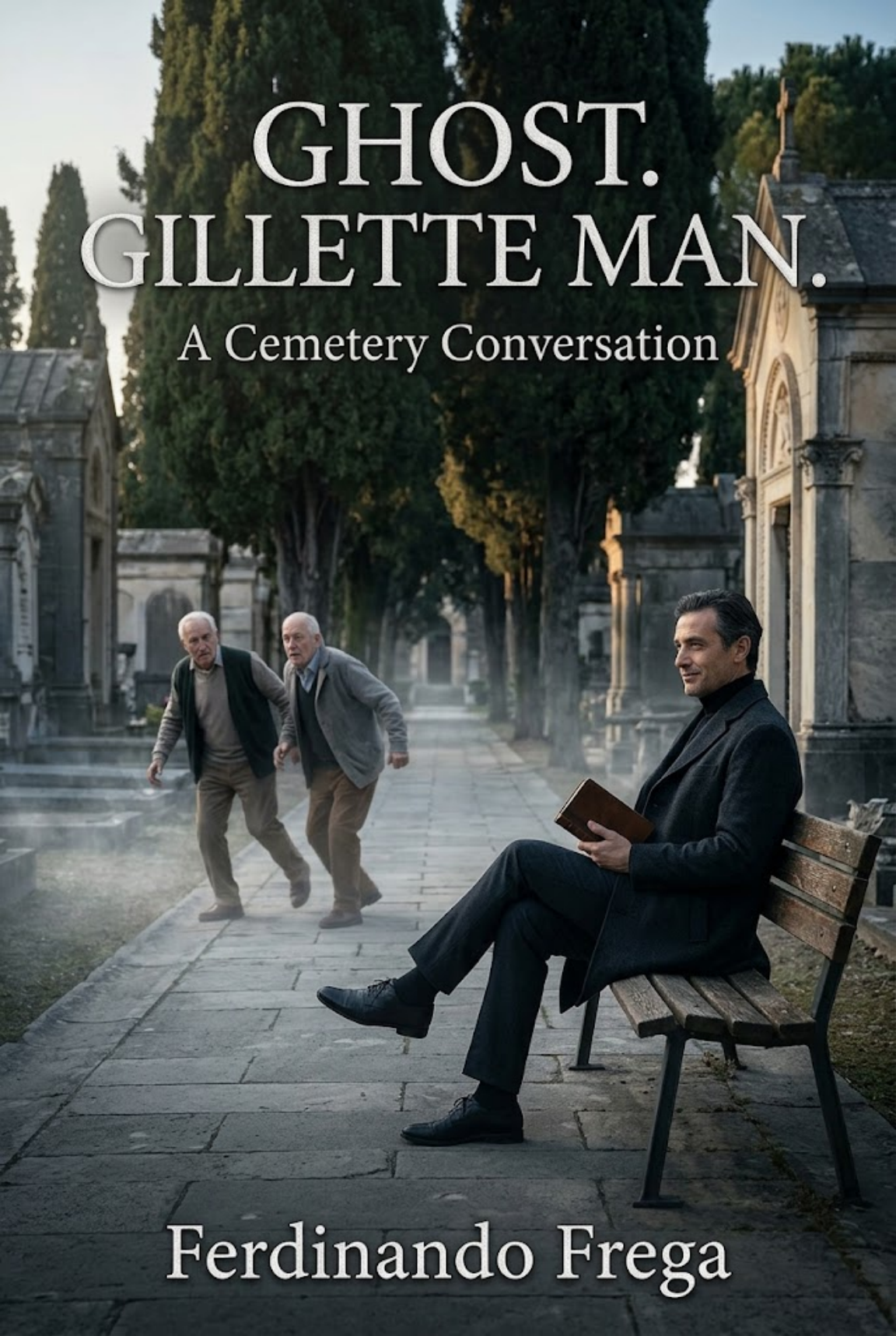

GHOST.
GILLETTE MAN.
A Cemetery Conversation
Ferdinando Frega

भूत। GILLETTE MAN।

“मैं तो बस एक भूत हूँ।”

The P&G Saga · 20

उस सुबह मैं पैदल क़ब्रिस्तान गया था। पापा के जन्मदिन की बरसी थी, और पैदल इतना लंबा रास्ता तय करने के बाद मैं थोड़ी देर आराम करने रुका, और बैठने के लिए एक बेंच मिल गई, जिस पर कुछ हिस्से में दो बुज़ुर्ग सज्जन बैठे थे।

मैंने उन्हें नमस्कार किया — अजनबियों के बारे में मेरे गलीली सहकर्मी का हमें छोड़ा हुआ एक पुराना नियम — और मैं साँस सँभालने के लिए बैठ ही रहा था कि दोनों ज़ोर-ज़ोर से बातें करने लगे, एक खुली बातचीत जो, देखने से लगता था, ज़रा भी गुप्त रखने के लिए नहीं थी, जबकि मैं ठीक वहीं बैठा था।

छोटे वाले ने बड़े वाले से पूछा कि उसके ख़याल से वह कैसे मरेगा, और अपने अंतिम संस्कार में किसे चाहेगा। दूसरे ने जवाब दिया: “मेरी उम्र में, सिर्फ़ 96, मेरी माँगें कम ही बची हैं, और मुझे उम्मीद नहीं कि मेरे मरने पर हर जानने वाला वहाँ होगा, क्योंकि मुझे उम्मीद है कि मैं पहले ही उनसे विदा लेने चला जाऊँगा, वे जहाँ भी हों।”

और बदले में बूढ़े ने छोटे वाले से पूछा: “और तुम, तुम कैसे मरना चाहते हो?”

“देखो,” उसने कहा, “मैं 62 का हूँ, बैंकों और फ़ाइनेंस कंपनियों से मैंने लगभग 26 क़र्ज़ ले रखे हैं, ऊपर से एक घर पर गिरवी जिसे मैं कभी नहीं देखूँगा, और ये हरामज़ादे सब फुर्ती से मुझसे बीमा पॉलिसियों पर दस्तख़त करवा गए, कहीं मैं पहले न मर जाऊँ — उन्होंने अपना पिछवाड़ा बचा लिया। इस बीच, एक बार आप मर गए, तो सरकार सारे टैक्स के बिल और जुर्माने रद्द कर देती है। और रही विरासत, तो मेरे पास छोड़ने को कुछ

नहीं। जो कुछ मेरे पास था, मैंने पक्का किया कि ज़िंदगी में मिली हर औरत को दे दूँ — पर 'थोड़ा-थोड़ा करके' के नियम से।"

"सवाल और मेरी जिज्ञासा के लिए माफ़ करना, पर यह 'थोड़ा-थोड़ा करके' क्या था? पैसा, शायद?"

"नहीं, मेरे दोस्त। सिर्फ़ प्यार — पर वह जो लौटकर नहीं आता, ठीक ज़िंदगी की तरह जब वे आपको दुनिया में लाते हैं।"

दोनों ठहाका मारकर हँस पड़े, और मैं भी उनके साथ हँस पड़ा। फिर वे मेरी ओर मुड़े और पूछा कि मैं क्या सोचता हूँ।

"बताने के लिए धन्यवाद, और मुझे ख़ुशी है कि आप दोनों मुझे देख सकते हैं, क्योंकि मैं तो बस एक भूत हूँ। और अगर इस पल हमारी आँखें मिल रही हैं, तो इसका मतलब है कि आप दोनों सही रास्ते पर हैं, उस रास्ते पर जो पिता के घर की ओर जाता है।"

वे उछलकर खड़े हुए, अपने अंडकोष पकड़ लिए — अपशकुन से बचने का पुराना इतालवी टोटका — और जितनी तेज़ी से उनकी टाँगें ले जा सकती थीं, भाग खड़े हुए।

मुझे अपना छोटा-सा व्यंग्य भरा मज़ाक पूरा करने का समय भी नहीं मिला था, और सिर्फ़ "अर्थगत पूर्वावलोकन" से ही वे डर के मारे ढह गए थे। तभी मुझे समझ आया कि शब्द कितने ताक़तवर होते हैं।

मैंने सोचा कि मुझे अब और आगे भी ज़्यादा सावधान रहना शुरू करना चाहिए, क्योंकि मुझे भी किसी भूत से मिलने का ख़तरा हो सकता है — और शायद वह मुझसे पूछे कि वेब के लोगों से मिलने के लिए क्या ADS और SEO के पैसे देने पड़ते हैं, या वैसा करना चाहिए जैसा मैंने किया: उनके बिना।

Ferdinando